Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय, पुस्तकालय
हरिद्वार

परिचय

प्रस्तुत कर्त्ता : जगदीश विद्यालंकार
(पुस्तकालयाध्यक्ष)

पुस्तकालय के मुख्य आकर्षण :

- ★ सम्दर्भ संग्रह
- ★ आर्ष साहित्य संग्रह
- ★ आयुर्वेद संग्रह
- ★ दुर्लभ पुस्तक संग्रह
- ★ प्रतियोगितात्मक परीक्षा संग्रह
- ★ गुरुकुल प्रकाशन संग्रह
- ★ आरक्षित पुस्तक संग्रह
- ★ शोध प्रबन्ध संग्रह
- ★ पं० इन्द्रजी प्रदत्त संग्रह
- ★ विज्ञान संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकाल आज वेद, वेदांग आर्य साहित्य तुलनात्मक धर्म संग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अंलकृत है। सहस्त्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेकों अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेकों भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भंडार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए आर्य संस्कृति की धरोहर रुप में विद्या व्यसनियों का उपासना केन्द्र बना हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना जिन उच्च आदर्शों एवं वैदिक मूल्यों की रक्षा हेतु की थी, उन्ही भावनाओं से अनुप्राणित होकर अनेकों महानुभाओं ने पुस्तकों के अपने निजी संग्रह गुरुकुल पुस्तकालय को प्रदान किये। स्वामी श्रदानन्दजी के सुपुत्र स्व० पं० इन्द्रजी ने अपने जीवन पर्यन्त संग्रहित सम्पूर्ण साहित्य गुरुकुल पुस्तकालय को अर्पित कर दिया।

वाँछित पाठ्य सामग्री की खोज

१—पुस्तकालय के सम्पूर्ण संग्रह की जानकारी देने हेतु पाठकों के उपयोग हेतु विषयानुसार रजिस्टर

परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षाओं से सम्बद्ध १० पत्रिकायें भी नियमित आ रही है।

प्राचीन पांडुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रन्थों की सुरक्षा :-

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग २० हजार दुर्लभ पाडुलिपियों एवं ग्रन्थों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने हेतु जहां इन ग्रन्थों की व्यापक जिल्दबंदी कराई जा रही है, वहां प्राचीन पांडुलिपियों को माइक्रोफिल्म द्वारा सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। इस विशाल कार्य हेतु हमें नेहरु संग्रहालय एवं पुस्तकालन, नई दिल्ली तथा भारतीय पुरातत्व संरक्षण, देहरादून का सतत सहयोग प्राप्त हो रहा है। इन ग्रन्थों के विशेष रख रखाव एवं सूचीकरण करने हेतु दुर्लभ ग्रन्थ संग्रह के नाम से अलग संग्रह हाल ही बनाया गया है। हाल ही में संस्कृति विभाग शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने प्राचीन दुलभ ग्रन्थों की सुरक्षा हेतु इस पुस्तकालय को ३०,००० रुपये का अनुदान स्वीकृत किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपलब्ध है जिसमें सभी पुस्तकों की सूची विषय के अनुसार अंकित है। अधिकांश पाठक इन विषय गत रजिस्टरों के आधार पर पुस्तकालय में उपलब्ध वांछित सामग्री की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

२—यदि किसी पाठक को वांछित पुस्तक को केवल लेखक या शीर्षक या विषय आदि में किसी की भी जानकारी है तो वह उसके आधार पर पुस्तक सूची कार्डो से (Catalogue Card) से अकारादि अनुक्रमणिका के आधार पर वांछित पुस्तक की उपलब्धता की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

३—इसी क्रम में पुस्तकों की विषयगत सूचियां (Subject Catalogue) भी पुस्तकालय में विद्यमान हैं. जिसके आधार पर पाठक किसी भी विषय की पुस्तकालय में उपलब्ध सम्पूर्ण ग्रन्थों की जानकारी पुस्तकालय से कर सकता है।

४—भारतीय विश्वविद्यालयों के द्वारा १८५७-१९८१ तक जिन विषयों में शोध कार्य हुआ उसकी जानकारी लेने हेतु जिज्ञासु पाठकों को पुस्तकालय में हाल ही में मंगवाये जाने वाले भारतीय विश्वविद्यालयों के परिसंघ (Association of Indian Universities) के द्वारा प्रकाशित शोध सदर्भ ग्रन्थों के विभिन्न खण्डों को देखना चाहिये। इन संदर्भ ग्रन्थों

के द्वारा शोधार्थियों को यह जानकारी हो सकती है कि किस विषय मे कितना शोध कार्य भारतीय विश्वविद्यालयों द्वारा किया जा रहा है।

५—पुस्तकालय को सभी अलमारों में उपलब्ध पुस्तकों का जानकारी देने हेतु उन स्थानों पर रखे गये गाइड बाक्स की सहायता से भी पुस्तको के विषय की जानकारी हो सकतो है।

६—पाठकों को अपनी वांछित सामग्री खोजने में किसी भी कठिनाई को दूर करने में सहयोग देने हेतु पूछताछ कक्ष की स्थापना की गई है। पाठकों को चाहिये कि किसी भी प्रकार की कठिनाई को दूर करने हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष सेआवेलम्ब सम्पर्क करें।

पुस्तकालय की गतिविधियाँ :-

इस विपुल पुस्तकालय का लाभ केवल यहां के छात्र प्राध्यापक वर्ग ही नहीं उठा रहे बल्कि हरिद्वार क्षेत्र में रहने वाले सभी बुद्धिजीवी, विद्या उपासक सरस्वती के इस पुस्तक मन्दिर का लाभ उठाते हैं। देश के अन्य विश्व विद्यालयों में शोध कर रहे अनेकों छात्र भारतीय संस्कृति एवं ऋषिदयान्द के तत्व दर्शन के अध्ययन हेतु इस पुस्तकालय का उपयोग उठाने सतत आते रहते हैं। वर्ष १९८२ १९८३ में लगभग २० हजार पाठकों ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह :

पुस्तकालय का विराट्संग्रह अपनी विविध विशिष्टताओं के लिये निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ है।

१-संदर्भ संग्रह २-पत्रिका सग्रह
३-आर्य साहित्य संग्रह ४-आयुर्वेद संग्रह
५-विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह
६-विज्ञान संग्रह ७-अंग्रेजी साहित्य संग्रह
८-पं० इन्द्रजी संग्रह ९-दुर्लभ पुस्तक संग्रह
१०-पांडुलिपी संग्रह ११-गुरुकुल प्रकाशन संग्रह
१२-प्रतियोगात्मक पुस्तक संग्रह
१३-शोध प्रवन्ध संग्रह १४-रूसी साहित्य संग्रह
१५-आरक्षित पुस्तक सग्रह १६-उर्दु संग्रह
१७-मराठी संग्रह १८-गुजराती साहित्य संग्रह

पुस्तकालय में उपर्युक्त पुस्तकों के विशिष्ट संग्रह के अतिरिक्त इस समय इस पुस्तकालय में ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न विषयों पर १७० पत्रिकाएं एवं १२ समाचार पत्र नियमित रुप से आ रहे हैं। पुस्तकालय में आने वाले सभी नवीन प्रकाशनों की जानकारी संबन्धित विभागाध्यक्ष को भी पुस्तकालय द्वारा समय समय पर दी जाती है।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार :

विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्यक्रम वर्ष १९८२-८३ से प्रारम्भ किया गया। जिसमें छात्रों को पुस्तकालय मे दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में उन्हें पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है जिससे वे अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सके।

ग्राम्य पुस्तकालय सेवा :-

विश्वावद्यालय पुस्तकालय के द्वारा ग्रामीण जीवन की बौद्धिक मांग को पूरा करने हेतु ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना का क्रम प्रारम्भ किया जा रहा है। इस श्रृंखला में प्रथम ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना कांगड़ी ग्राम में की गई। आज इस ग्राम्य पुस्तकालय में १००० से अधिक पुस्तके संग्रहीत हैं। इसके अतिरिक्त संवड विद्या ट्रस्ट, जयपुर के सौजन्य से इस पुस्तकालय में अनेकों पत्र-पत्रिकायें भी नियमित आ रही है। निकट भविष्य में एक अन्य ग्राम्य पुस्तकालय रुहालकी में स्थापित किया जा रहा है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा :

विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने में प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगितात्मक पुस्तक संग्रह की स्थापना की है जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में प्रतियोगिता परीक्षाओं से सम्बद्ध १० पत्रिकाये भी नियमित आ रही है।

प्राचीन पांडुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रन्थों की सुरक्षा :-

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग २० हजार दुर्लभ पाडुलिपियों एवं ग्रन्थों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने हेतु जहां इन ग्रन्थों की व्यापक जिल्दबंदी कराई जा रही है, वहां प्राचीन पांडुलिपियों को माइक्रोफिल्म द्वारा सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। इस विशाल कार्य हेतु हमें नेहरु संग्रहालय एवं पुस्तकालन, नई दिल्ली तथा भारतीय पुरातत्व संरक्षण, देहरादून का सतत सहयोग प्राप्त हो रहा है। इन ग्रन्थों के विशेष रख रखाव एवं सूचीकरण करने हेतु दुर्लभ ग्रन्थ संग्रह के नाम से अलग संग्रह हाल ही बनाया गया है। हाल ही में संस्कृति विभाग शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने प्राचीन दुलभ ग्रन्थों की सुरक्षा हेतु इस पुस्तकालय को ३०,००० रुपये का अनुदान स्वीकृत किया है।

भविष्य के कार्यक्रम :

१—गुरुकुल पुस्तकालय के वृहत् संग्रह को अधिकाधिक बुद्धि जीवियों के सम्मुख लाने हेतु विभिन्न विषयों में उपलब्ध ग्रन्थों की पुस्तकाकार रुप में सूची बनाने का कार्यक्रम विचाराधीन है। इसी प्रकार पुस्तकालय में उपलब्ध सजिल्द पत्रिकाओं एवं दुर्लभ पुस्तकों एवं पांडुलिपियों को भी सूचीबद्ध करके प्रकाशित किये जाने का कार्य पुस्तकालय के सामने है।

२—यह बड़े हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने भी १९८३ में मनाये जाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय ऋषि दयानन्द निर्वाण शदाब्दी के सम्मुख जो दस सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है, उसमें एक कार्यक्रम गुरुकुल पुस्तकालय को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक साहित्य शोध पुस्तकालय के रुप में प्रस्तुत किया जाना भी है।

३—गुरुकुल पुस्तकालय के संग्रह को देखते हुए आधिकारिक स्तर पर राष्ट्रीय वैदिक पुस्तकालय के रुप में इसकी छवि का निर्माण किये जाने का प्रयत्न चल रहा है।

४—विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय पुस्तकालय को ढाई लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया है। इस अनुदान से इस पुस्तकालय के विभिन्न संग्रहों को नवीन प्रकाशनों से सज्जित करने में सहायता मिलेगी।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, पुस्तकालय

हरिद्वार

परिचय

प्रस्तुत कर्त्ता : जगदीश विद्यालंकार

(पुस्तकालयाध्यक्ष)

पुस्तकालय के मुख्य आकर्षण :

- ★ सन्दर्भ संग्रह
- ★ आर्य साहित्य संग्रह
- ★ आयुर्वेद संग्रह
- ★ दुर्लभ पुस्तक संग्रह
- ★ प्रतियोगितात्मक परीक्षा संग्रह
- ★ गुरुकुल प्रकाशन संग्रह
- ★ आरक्षित पुस्तक संग्रह
- ★ शोध प्रबन्ध संग्रह
- ★ पं० इन्द्रजी प्रदत्त संग्रह
- ★ विज्ञान संग्रह

परिचय

गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से पोषित यह पुस्तकाल आज वेद, वेदांग आर्य साहित्य तुलनात्मक धर्म संग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थों से अंलकृत है। सहस्त्रों दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेकों अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेकों भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भंडार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए आर्य संस्कृति की धरोहर रुप में विद्या व्यसनियों का उपासना केन्द्र बना हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना जिन उच्च आदर्शों एवं वैदिक मूल्यों की रक्षा हेतु की थी, उन्ही भावनाओं से अनुप्राणित होकर अनेकों महानुभाओं ने पुस्तकों के अपने निजी संग्रह गुरुकुल पुस्तकालय को प्रदान किये। स्वामी श्रदानन्दजी के सुपुत्र स्व० पं० इन्द्रजी ने अपने जीवन पर्यन्त संग्रहित सम्पूर्ण साहित्य गुरुकुल पुस्तकालय को अर्पित कर दिया।

वाँछित पाठ्य सामग्री की खोज

१—पुस्तकालय के सम्पूर्ण संग्रह की जानकारी देने हेतु पाठकों के उपयोग हेतु विषयानुसार रजिस्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar